SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों का भुंजिया जनजाति की जीवनशैली पर प्रभावः एक समीक्षा

कृपा राम महेश्वरी, शोधार्थी, **पुष्पा भारती,** पीएच–डी., अर्थशास्त्र विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कृपा राम महेश्वरी, शोधार्थी
पुष्पा भारती, पीएच–डी.
E-mail : kriparammaheshwari@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/04/2025
Revised on : 16/06/2025
Accepted on : 25/06/2025
Overall Similarity : 00% on 17/06/2025

शोध सार

यह शोध पत्र भुंजिया जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली पर आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। भुंजिया जनजाति, जो भारत में विशेष रूप से छत्तीसगढ़ और ओडिशा में निवास करती है, एक "विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह" (PVTG) के रूप में चिन्हित है। परंपरागत रूप से यह जनजाति कृषि, वनों पर निर्भरता और अपने विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्यों के साथ एक आत्मनिर्भर जीवन जीती रही है लेकिन हाल के दशकों में आर्थिक उदारीकरण, सरकारी योजनाओं, शैक्षणिक प्रसार और बाजार की पहुँच ने इनके जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। इस अध्ययन में केवल द्वितीयक आंकड़ों जैसे जनगणना रिपोर्ट, अनुसंधान लेख, सरकारी दस्तावेज और एनजीओ रिपोर्ट्स का उपयोग किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भुंजिया जनजाति की पारंपरिक आजीविका में गिरावट आई है और मजदूरी, मनरेगा जैसे कार्यक्रमों पर निर्भरता बढ़ी है। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता से जीवन स्तर में कुछ सुधार तो हुआ है, लेकिन सांस्कृतिक पहचान, परंपराएँ और सामुदायिक एकता में क्षरण देखने को मिला है। इसके अलावा, विस्थापन, भूमि अधिकारों की हानि और योजनाओं के अपर्याप्त क्रियान्वयन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि आर्थिक विकास तभी प्रभावी हो सकता है जब वह जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना और स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर समावेशी और संवेदनशील ढंग से किया जाए। इससे टिकाऊ और न्यायसंगत विकास संभव हो सकेगा।

मुख्य शब्द

भुंजिया जनजाति, आर्थिक परिवर्तन, आजीविका और जीवनशैली, सांस्कृतिक परिवर्तन.

प्रस्तावना

भारत विविधता में एकता का परिचायक देश है, जहाँ विभिन्न जातीय, भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक समूह निवास करते हैं। इन विविधताओं में जनजातीय समुदाय एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। जनजातीय समूह न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक हैं, बल्कि वे प्रकृति से गहरे जुड़े, आत्मनिर्भर और विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक संरचनाओं के वाहक भी हैं। इन्हीं में से एक जनजाति है भुंजिया जनजाति, जो भारत के छत्तीसगढ़ और ओडिशा राज्यों में मुख्य रूप से निवास करती है।

भुंजिया जनजाति की जनसंख्या अपेक्षाकृत कम है और यह जनजाति ''विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह'' (Particularly Vulnerable Tribal Group - PVTG) के अंतर्गत वर्गीकृत की गई है। PVTG श्रेणी उन जनजातीय समुदायों के लिए बनाई गई है जो अत्यधिक पिछड़े, सीमित संसाधनों पर निर्भर और मुख्यधारा से कटे हुए हैं। भारत सरकार द्वारा वर्ष 1975 में प्रारंभ किए गए एक विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत ऐसे समुदायों की पहचान की गई थी जिनकी जनसंख्या कम है, साक्षरता दर न्यूनतम है और पारंपरिक जीवनशैली में परिवर्तन अत्यंत धीमा है। भुंजिया जनजाति भी इसी श्रेणी में आती है।

भुंजिया जनजाति दो प्रमुख उपसमूहों में विभाजित है, छुक–भुंजिया और गौड़–भुंजिया। इनमें से छुक–भुंजिया अधिक पारंपरिक और वन–आश्रित मानी जाती है। भुंजिया समुदाय मुख्यतः कुटरू, बीजापुर (छत्तीसगढ़) और नुवापाड़ा, कालाहांडी (ओडिशा) जिलों में केंद्रित है। इनकी पारंपरिक आजीविका कृषि, वनों से प्राप्त संसाधनों का संग्रहण, मछली पकड़ना और हस्तशिल्प रही है।

जनजातीय समुदायों में हो रहे सामाजिक–आर्थिक बदलावों का महत्व

आधुनिकता, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास के युग में जनजातीय समुदायों पर सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से गहरा प्रभाव पड़ा है। सरकारी योजनाओं, आधारभूत संरचनाओं के विकास, बाजारीकरण और बाहरी समाज के संपर्क ने इनके जीवन में बड़े बदलाव उत्पन्न किए हैं। वेरियर एल्विन, जो भारत के प्रसिद्ध मानवविज्ञानी थे, ने जनजातियों के संदर्भ में कहा थाः "A tribal is not a problem; he is a part of the solution." यह कथन हमें यह सोचने को प्रेरित करता है कि जनजातियों को पिछड़ा मानकर उनके ऊपर योजनाएँ थोपी नहीं जानी चाहिए, बल्कि उन्हें विकास प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार बनाया जाना चाहिए।

हालांकि विकास की प्रक्रिया में जनजातीय समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार जैसी सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं, लेकिन इसके साथ–साथ उनके पारंपरिक मूल्य, जीवनशैली, और सांस्कृतिक पहचान पर भी संकट मंडराने लगा है। कई बार विकास, विस्थापन और सांस्कृतिक क्षरण का कारण बनता है।

राम सहाय पांडेय, प्रसिद्ध समाजशास्त्री, कहते हैंः ''जनजातीय जीवन का सौंदर्य उसकी प्रकृति और आत्मनिर्भरता में है, जो बाजार आधारित अर्थव्यवस्था से टकराव में है।'' इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम यह अध्ययन करें कि आधुनिक आर्थिक परिवर्तन किस प्रकार भुंजिया जनजाति जैसी समुदायों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- भुंजिया जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली और आजीविका का अध्ययन।
- आधुनिक आर्थिक योजनाओं, बाजारीकरण और सरकारी हस्तक्षेप से उत्पन्न परिवर्तनों की पहचान।
- इन परिवर्तनों के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक संरचनाओं में आए परिवर्तनों का विश्लेषण।
- चुनौतियों और अवसरों की पहचान जो भुंजिया जनजाति वर्तमान में अनुभव कर रही है।

साहित्य समीक्षा

भारत में जनजातीय समुदायों पर अनेक विद्वानों ने समय–समय पर शोध किए हैं, जिनका मुख्य ध्यान आधुनिकता और बाहरी हस्तक्षेप के प्रभावों पर केंद्रित रहा है। वेरियर एल्विन (1964) ने जनजातीय जीवन की प्राकृतिकता और आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए चेताया कि बिना सांस्कृतिक समझ के लादी गई विकास नीतियाँ जनजातियों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। विजय कुमार (एक्सा, 1999) ने कहा कि भारत की जनजातियाँ वास्तव में देश की ष्आदिवासीष् जनसंख्या हैं, जिनके सांस्कृतिक अधिकार और पहचान को राज्य द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए। इसी तरह, राठ, 2006 ने विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए बताया कि ये समुदाय अत्यधिक पिछड़े हैं और योजनाओं का लाभ सीमित रूप में ही प्राप्त कर पाते हैं। शर्मा (2015) ने केंद्रीय भारत की PVTG जनजातियों पर अध्ययन कर यह दर्शाया कि आर्थिक बदलावों ने उनकी आजीविका को प्रभावित किया है, लेकिन इसके साथ सांस्कृतिक क्षरण भी हुआ है।

भुंजिया जनजाति पर केंद्रित अध्ययनों की संख्या सीमित है, परंतु कुछ विद्वानों ने इस विषय को गहराई से छुआ है। बीके पटनायक (2019) ने नुआपाड़ा (ओडिशा) जिले में भुंजिया बच्चों की शिक्षा पर शोध करते हुए बताया कि आर्थिक, भाषाई और सामाजिक अवरोध उनकी स्कूली भागीदारी को सीमित करते हैं। सरकार (2018) ने छत्तीसगढ़ के भुंजिया समुदाय पर अध्ययन करते हुए बताया कि सरकारी योजनाओं की जानकारी और पहुँच का अभाव उनकी भागीदारी को प्रभावित करता है। बेहरा (2010) और मुंडा (2014) ने बाजारीकरण और आधुनिकता के चलते पारंपरिक जनजातीय ढाँचों के विघटन पर चिंता जताई। चौधरी (2011) ने यह तर्क दिया कि बाजार शक्तियों ने जनजातीय समुदायों की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को असंतुलित कर दिया है, जिससे वे बाहरी तंत्र पर निर्भर होते जा रहे हैं।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भुंजिया और अन्य PVTG जनजातियों को लेकर विकास की वर्तमान धारणाएँ पुनः समीक्षा योग्य हैं। आधुनिक आर्थिक परिवर्तन जहाँ एक ओर सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर वे सांस्कृतिक पहचान, पारंपरिक ज्ञान और सामाजिक ताने–बाने को कमजोर कर रहे हैं। अतः संतुलित, संवेदनशील और समुदाय–आधारित विकास मॉडल की आवश्यकता है जो इन जनजातियों की विशेष परिस्थितियों और आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सशक्त बनाए।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप का अनुसंधान है, जो केवल द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसका उद्देश्य आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के कारण भुंजिया जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली, आजीविका और सांस्कृतिक संरचना में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। अनुसंधान के लिए जिन द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, उनमें भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट, 2011, जनजातीय कार्य मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें, अनुसंधान संस्थानों द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक जर्नल, गैर–सरकारी संगठनों की परियोजना रिपोर्टें तथा मानवविज्ञान और समाजशास्त्र विषयक शैक्षणिक लेख सम्मिलित हैं। इस अध्ययन में जानकारी एकत्र करने के बाद विषयगत विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। विभिन्न विषयों जैसे कि आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रवासन, सांस्कृतिक परिवर्तन आदि को श्रेणियों में विभाजित करके उनमें निहित बदलावों को समझने की कोशिश की गई है।

भुंजिया जनजाति की पारंपरिक सामाजिक–आर्थिक स्थिति

भुंजिया जनजाति भारत के छत्तीसगढ़ और ओडिशा राज्यों में निवास करने वाली विशिष्ट जनजातीय समूह है, जिसे भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह जनजाति मुख्यतः कुटरू (बीजापुर) जिले के जंगलों एवं नुआपाड़ा (ओडिशा) के पर्वतीय क्षेत्रों में बसी हुई है। पारंपरिक रूप से भुंजिया जनजाति का जीवन वन और प्रकृति पर आधारित रहा है। भुंजिया समुदाय की सामाजिक संरचना सरल, सामूहिक और परंपरागत मूल्यों पर आधारित होती है। इनकी दो प्रमुख उपशाखाएँ हैंः छुक भुंजिया और गौड़ भुंजिया। छुक भुंजिया अपेक्षाकृत अधिक पारंपरिक और वन आधारित जीवनशैली अपनाती है, जबकि गौड़

भुंजिया कुछ हद तक समकालीन समाज से जुड़ चुकी है।

इनकी पारंपरिक आजीविका मुख्य रूप से झूम खेती, वनोपज संग्रहण (जैसेः महुआ, तेंदूपत्ता, साल बीज), मछली पकड़ना, और सीमित स्तर की पशुपालन गतिविधियों पर आधारित रही है। आर्थिक लेन–देन अक्सर वस्तु विनिमय के माध्यम से होता था। नकद अर्थव्यवस्था और बाजार से इनका संपर्क सीमित था। सामाजिक जीवन में समुदाय आधारित निर्णय प्रणाली जैसे मुखिया, पंचायत, और आध्यात्मिक पुरोहित (गुनिया) की भूमिका प्रमुख होती थी। इनके धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा, पूर्वज पूजा, और स्थानीय देवी–देवताओं में आधारित होते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य की पहुँच पारंपरिक समय में बहुत ही न्यूनतम थी। महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ वनोपज संग्रहण और खेती में भी भागीदार रहती थीं। संक्षेप में, भुंजिया जनजाति की पारंपरिक सामाजिक–आर्थिक स्थिति एक आत्मनिर्भर, सामुदायिक और प्रकृति–केंद्रित जीवनशैली पर आधारित रही है, जिसमें आधुनिकीकरण से पहले बाहरी हस्तक्षेप बहुत कम था।

आधुनिक आर्थिक परिवर्तन और उनके कारक

भुंजिया जनजाति, जो छत्तीसगढ़ और ओडिशा की सीमावर्ती पहाड़ियों और जंगलों में निवास करती है, भारत के उन आदिवासी समुदायों में से एक है जिन्हें ''विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह'' (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। परंपरागत रूप से यह जनजाति झूम खेती, वनोपज संग्रहण और प्रकृति–पूजन पर आधारित सामुदायिक जीवन शैली अपनाती थी परंतु स्वतंत्रता के बाद से विशेष रूप से 1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात, जब भारत वैश्विक बाजार से गहराई से जुड़ने लगा, तब से भुंजिया जनजाति जैसे समुदायों के सामाजिक और आर्थिक ढांचे में गहरा परिवर्तन आया। इस संदर्भ में, प्रसिद्ध मानवविज्ञानी वेरियर एल्विन का कथन आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। "We must protect the tribal people from the dangers of exploitation and cultural destruction." आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के प्रमुख कारकों में सरकारी योजनाएँ, जैसे कि मनरेगा, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, वन अधिकार अधिनियम, और जन–धन योजना सम्मिलित हैं, जिन्होंने समुदाय को बाहरी अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया। इसके साथ ही संचार तकनीक, मोबाइल फोन, और इंटरनेट ने भुंजिया युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ा, जिससे उनके जीवन में नई आकांक्षाओं का जन्म हुआ। एक्सा (1999) के अनुसार, "जनजातियों को विकास का लाभ देने के लिए उन्हें पहले सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से समझना जरूरी है।" परंतु अधिकांश योजनाएँ जनजातीय संदर्भों को समझने में असफल रही हैं, जिसके कारण उनका प्रभाव सतही रह गया है।

जीवनशैली और आजीविका पर प्रभाव

इन परिवर्तनों का सबसे सीधा प्रभाव आजीविका पर पड़ा है। पारंपरिक कृषि और वन संसाधनों पर आधारित जीविकोपार्जन अब मजदूरी, निर्माण कार्य और सरकारी योजनाओं पर निर्भर हो गया है। शर्मा (2015) के अनुसार, PVTGs के पारंपरिक पेशों को आधुनिक आर्थिक नीतियाँ विस्थापित कर रही हैं, जिससे उनका सामाजिक आत्मबल प्रभावित हो रहा है।" शिक्षा की स्थिति में भी आंशिक सुधार हुआ है, विद्यालयों की संख्या बढ़ी है, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता, भाषा की अनुकूलता और सांस्कृतिक अनुकूलन अब भी चुनौती बने हुए हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में सुधार हुआ है, परंतु भुंजिया समुदाय की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही हैं। बेहरा (2010) का कहना है कि "आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली जनजातीय क्षेत्रों में तब तक कारगर नहीं हो सकती जब तक वह स्थानीय संस्कृति और विश्वासों को समाहित न करे।" भोजन की विविधता में भी बदलाव आया है अब पारंपरिक खाद्य स्रोतों की जगह सार्वजनिक वितरण प्रणाली से प्राप्त सामग्री पर निर्भरता बढ़ी है, जिससे पोषण असंतुलन की संभावना बढ़ी है।

सांस्कृतिक दृष्टि से, भुंजिया समुदाय गहन परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पहले जो नृत्य, गीत, कथा और प्रकृति पूजा जीवन का अभिन्न हिस्सा थे, वे अब केवल त्योहारों या सरकारी आयोजनों तक सीमित रह गए हैं। युवा पीढ़ी मोबाइल, फिल्में और बाहरी संस्कृति से अधिक प्रभावित हो रही है। राम सहाय पाण्डेय के अनुसार,

"आधुनिकता ने आदिवासी जीवन में भौतिक सुविधा तो दी है, परंतु आत्मिक संतुलन को भी तोड़ा है।"

चुनौतियाँ

इन आर्थिक और सामाजिक बदलावों के साथ अनेक चुनौतियाँ सामने आई हैं। सबसे बड़ी चुनौती सांस्कृतिक क्षरण और पहचान के संकट की है। जब समुदाय की भाषा, परंपरा और सामाजिक संरचना कमजोर होती है, तो उसकी आंतरिक एकता भी डगमगाने लगती है। आर्थिक अस्थिरता, विस्थापन और योजनाओं के खराब क्रियान्वयन ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। सरकार (2018) ने अपने अध्ययन में बताया कि "सरकारी योजनाओं की जानकारी और पहुँच का अभाव भुंजिया जैसे समुदायों की मुख्यधारा में भागीदारी को सीमित करता है।"

निष्कर्ष एवं सुझाव

इन परिस्थितियों में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भुंजिया जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली और आजीविका पर आधुनिक आर्थिक परिवर्तन का मिला–जुला प्रभाव पड़ा है। जहाँ कुछ क्षेत्रों में विकास हुआ है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असंतुलन, सांस्कृतिक क्षरण और आर्थिक असुरक्षा भी उत्पन्न हुई है इसलिए जरूरी है कि विकास की परिभाषा को केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रखते हुए उसे एक समावेशी और संस्कृति–संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ देखा जाए।

इस दिशा में कुछ ठोस सुझाव दिए जा सकते हैं. पहला, सांस्कृतिक संरक्षण के लिए स्थानीय भाषा, परंपरा और कलाओं को शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में स्थान दिया जाए दूसरा, पारंपरिक आजीविका को बाजार से जोड़कर स्थानीय उत्पादों का मूल्यवर्धन किया जाए तीसरा, शिक्षा प्रणाली को स्थानीय संदर्भ में ढालते हुए जनजातीय शिक्षक, द्विभाषिक पाठ्यक्रम और सांस्कृतिक–संवेदी पद्धतियाँ अपनाई जाएँ चौथा, स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान को भी महत्व दिया जाए पाँचवाँ और सबसे आवश्यक सुझाव है. भुंजिया जैसे समुदायों को नीति निर्माण और योजना क्रियान्वयन में सक्रिय भागीदार बनाया जाए, जिससे वे केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि अपने भविष्य के निर्माता बन सकें।

इस प्रकार, भुंजिया जनजाति के अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि यदि विकास को न्यायसंगत, टिकाऊ और मानव–केंद्रित बनाना है, तो उसमें आर्थिक के साथ–साथ सांस्कृतिक और सामाजिक पक्षों को भी समान महत्व देना अनिवार्य है। जैसा कि अमर्त्य सेन ने कहा है। "Development has to be more than just the expansion of income; it must include the enhancement of freedoms and capabilities of people." यह सिद्धांत जनजातीय समुदायों के संदर्भ में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. Behera, D. K. (2010) *Globalization and Tribal Development in India,* Serials Publications, New Delhi.
2. Census of India (2011) *Primary Census Abstract Data*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India, Retrieved from https://censusindia.gov.in/, Accessed on 17/02/2025.
3. Chaudhary, S. (2011) Impact of Market Forces on Tribal Economy, *Journal of Tribal Research,* 21(2), 67–75.
4. Elwin, V. (1964) *The Tribal World of Verrier Elwin*. Oxford University Press, New Delhi.
5. Ministry of Tribal Affairs (2020) Statistical Profile of Scheduled Tribes in India. Government of India. Retrieved from https://tribal.nic.in/, Accessed on 17/02/2025.
6. Munda, R. (2014) Adivasi Identity and Development, Indian Social Institute, New Delhi.

7. Pandey, R. S. (2002) Tribal Development in India: A Study in Human Development, Anmol Publications, New Delhi.

8. Patnaik, B. (2019) Educational Participation among Bhunjia Children in Nuapada District, *Odisha Journal of Tribal Studies,* 8(1), 33–42.

9. Planning Commission (2008) *Development Challenges in Extremist Affected Areas: Report of an Expert Group*. Government of India. Retrieved from https://niti.gov.in/, Accessed on 17/02/2025.

10. Rath, G. C. (2006) *Tribal Development in India: The Contemporary Debate,* Sage Publications, New Delhi.

11. Sarkar, S. (2018) Accessibility and Awareness: A Study on PVTG Bhunjia in Chhattisgarh, *Social Work Chronicle,* 7(2), 102–117.

12. Sen, A. (1999) *Development as Freedom* Oxford University Press, New Delhi.

13. Sharma, S. K. (2015) Socio-Economic Changes Among the PVTGs in Central India: An Anthropological Study, *Indian Journal of Anthropology*, 3(2), 45–56.

14. Xaxa, V. (1999) Tribes as Indigenous People of India, *Economic and Political Weekly*, 34(51), 3589–3595.

****